Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

आदिवासी समुदाय की समस्याएँ एवं चुनौतियाँ पर एक लेख

Mukesh Rani[1]*, Dr. Navita Rani[2]

[1] Research Scholar, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

[2] Assistant Professor, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

सार - ***हिन्दी उपन्यासों का आदिवासी जीवन पक्ष वैसा नहीं है जैसा गैर आदिवासी लोग उसे समझते हैं । वास्तविक चित्र गढ़े गए चित्र से बहुत अलग है। हालांकि आदिवासी विमर्श, स्त्री विमर्श और दलित विमर्श लगभग साथ ही हिन्दी साहित्य में विमर्श के केंद्र में उपस्थित होते हैं, इसलिये ये तीनों अपनी विचारधारा और चिंतन से एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। यहाँ यह कहने की जरूरत नहीं कि वर्तमान समय अस्मिताओं के उदय और उनके संघर्ष का समय है। आदिवासी समाज का इतिहास बहुत प्राचीन है, यह इतना ही प्राचीन है जितना मानव इतिहास | आज के गैरहैं अनभिज्ञ बिल्कुल से संस्कृति और समाज आदिवासी प्रायः लोग जनजातीय-, जिसके कारण उन्हें आदिवासी समाज के प्रति गलत धारणाओं और सूचनाओं ने घेर लिय है | अब तक लोग आदिवासियों को बर्बर और जंगली समझते रहे हैं | वास्तव में अपने को सभ्य समझने वाले कुंठित मानसिकता से ग्रसित लोगों ने स्वयं ही आदिवासियों के प्रति गलत धारणाएँ| प्रचारितहै दिया परिचय का अज्ञानता कर प्रसारित-|दुखद है कि हमारे संविधान में नागरिकों के अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिए एक से बढ़कर एक अधिनियम तो बनाये गए हैं, लेकिन जब उन अधिनियमों को आदिवासी समाज पर क्रियान्वित करने का समय आता है, तो वे अधिनियम महज छलावा साबित होते हैं | इस लेख में आदिवासीयों के जीवन मे आने वाली समस्याओं की विवरण किया है।***

कीबर्ड – आदिवासी, समुदाय, चुनौतिया, समस्या

----------X----------

परिचय

भारत में अलग-अलग आदिवासी समुदाय हैं | ये आदिवासी समुदाय हमारे देश के विभिन्न अंचलों में निवास करते हैं | इन आदिवासी समुदायों की समस्याएँ भौगोलिक क्षेत्रों से जुडी हुई हे | लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्षिम, अरुणाचल प्रदेश, नागालेंड, मणिपुर ओर मिजोरम, मेघालय के आदिवासी समुदाय मुख्य रूप से पहाड़ों पर निवास करते हैं | इन समुदायों के समक्ष कृषि की दृष्टि से जूम खेती से सम्बंधित समस्याएँ हैं | इनके पास पर्याप्त कृषि योग्य भूमि नहीं है | अतः ये समुदाय पहाड़ों पर कृषि योग्य भूमि निकालकर उस पर खेती करते हैं | धान, मकई, रागी (मड़वा) आदि की खेती के अतिरिक्त ये लोग मुख्य रूप से विभिन्न सज्नियों का उत्पादन करते हैं | कहीं-कहीं पर पशुपालन और दुग्ध उत्पादन इनकी आय का मुख्य स्रोत है, जैसे - अरुणाचल प्रदेश के तवांग आदि क्षेत्रों में याक के पालन से उन्हें दूध और घी मिलता है | गत कुछ वर्षों से पहाड़ी अंचल के आदिवासियों में एक नई चेतना आई है ओर वे विभिन्न फलों के उत्पादन में भी अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं | आज वह संतरा, पपीता, अमरूद, मूंगफली, कीवी आदि फलों का उत्पादन करके अपनी आधिक स्थिति को मजबूत कर रहे हैं | पहाड़ी अंचलों में अधिक वर्षा के कारण भूस्खलन होता है | तब ज़ूम खेती को काफी नुकसान पहुँचता है | अतः भू-स्खलन के कारण कृषि और आवागमन प्रभावित होता है । आवागमन की समस्या पहाड़ी अंचल के आदिवासियों के समक्ष एक मुख्य चुनोती है | जिसका वे बराबर सामना करते हैं |[1]

शिक्षा की दृष्टि से भी पहाड़ी अंचल के आदिवासी जूझते रहे हैं | उन्हें अच्छी शिक्षा प्राप्ति के लिए अपने बच्चों को बाहर भेजना पड़ता है | सौभाग्य से कुछ वर्षों से पहाड़ी अंचलों में केंद्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय और केंद्रीय विश्वविद्यालयों की स्थापना से शिक्षा सम्बंधित समस्याएँ धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही हैं | अब कुछ वर्षों से पहाड़ी अंचल के आदिवासियों के बच्चों को इंजीनियरिंग और मेडिकल शिक्षा भी अपने अंचल में मिलने लगी हैं | जिन पहाड़ी क्षेत्रों में, पहाड़ी प्रांतों में आदिवासी समुदाय बहुमत में हैं, वहाँ राजनीतिक बागडोर भी आदिवासी समुदाय के हाथों में है । लेकिन जहाँ इनकी संख्या कम है वहाँ इनके समक्ष राजनीतिक और सामाजिक चुनौतियाँ भी पेदा होती रहती हैं |

www.ignited.in

आदिवासी समुदायों के शैक्षिक और सामाजिक विकास के लिए जो धनराशि केंद्र आवंटित करता है वह राशि अन्य मदों पर व्यय होती रही है | अप्रत्यक्ष रूप से कहीं-कहीं पर आदिवासियों का शोषण होता रहा है | पहाड़ी क्षेत्रों में जंगलों से प्राप्त जडी-बूटियाँ भी स्थानीय व्यापारी ओने-पोने दामों में क्रय करते रहे हैं | हर स्तर पर आधिक शोषण का चक्र अभी भी किसी ना किसी रूप में कायम है | इसके अतिरिक्त पहाड़ी अंचल के जनजातीय समुदाय के लोगों की सर्व सुलभ, मेदानी क्षेत्र के लोगों के पास से कुछ भूमि है | इसलिए अधिकांश लोग इन्हें इधर के नेपाली समझकर गत कुछ वर्षों से उत्तर और दक्षिण भारत में पूर्वोत्तर भारत के जनजातीय समुदाय के विद्यार्थियों पर आक्रमण और अत्याचार होते रहे हैं | कभी-कभी यौन सम्बंधी जघन्य अपराध भी होते रहे हैं | पूर्वोत्तर भारत और उसके जनजातीय समुदायों के विषय में दक्षिण ओर उत्तर के लोगों की समझ बहुत अच्छी नहीं है | जिसके कारण पूर्वोत्तर के जनजातीय समुदाय के लोगों को अपने से अलग समझा जाता है | सामाजिक और सांस्कृतिक भिन्नता भी इस समस्या का एक कारण है | साथ ही भाषा और शारीरिक बनावट की भिन्नता भी प्रमुख समस्या है | दुर्भाग्य से हमारे देश के पाठ्यक्रमों में अपने देश के लोगों के विषय में गहराई से जानने की सामग्री नहीं है | कहने तात्पर्य यह है कि कोई ऐसा सम्पूर्ण पाठ्यक्रम नहीं है, जिससे देश के लोगों के बारे में गहराई से जाना जा सके |[2]

उत्तर और पश्चिमोत्तर भारत में भी पूर्वोत्तर, दक्षिण भारत जेसी स्थिति बनी हुई है, बल्कि यहाँ पर तो शोषणतंत्र का मायाजाल और गहरा है | भील, गोंड, संथाल, उराँव, हल्बी आदि समूचे भारत वर्ष के सभी जनजातीय समुदायों के समक्ष एक समस्या समान रूप से व्याप्त है और वह है नशाखोरी की समस्या | यह समस्या इन लोगों को आर्थिक और शारीरिक दृष्टि से बहुत नुकसान पहुंचा रही है | ये समस्या घटने के स्थान पर तेजी से पनप रही है | देशी-विदेशी ड्रग माफिया इसका पूरा लाभ उठा रहें हैं | जनजातीय समुदाय की समस्याएँ निम्नलिखित इस प्रकार से हैं -

सामाजिक समस्या

आज आदिवासियों के बीच एक नई समस्या ने जन्म ले लिया है वह है आदिवासी कन्याओं का अपहरण और उनका बलात्कार | कुछ गैर आदिवासी उन पर शोध करने के नाम पर उनके इलाके में घुस जाते हैं | उसके बाद उनका विश्वास जीतकर उनकी लड़कियों के साथ शादी रचाते हैं, यौन सुख का आनंद लेते हैं ओर फिर वह वहाँ से भाग जाते हैं | इस समस्या पर ध्यानाकर्षित करते हुए इतिहासकार लाला जगदलपुरी लिखते हैं मांस-मद्य -, नृत्यआकर्षक ओर गीतों- यौन वाली संबंधों- इस को सभ्यता महानगरीय ने संस्कृति-की आरण्य की बस्तर प्रभावित कदर किया है कि समय तहाँ-जहाँ पर समय- और हैं रहते घटते काण्ड अपहरण से रूप अप्रमाणिक आदिवासी है रहता होता बबांद जीवन का बालाओं-| यह उल्लेखनीय है कि बस्तर के आदिवासी-गैर में समाज- लिए के बालाओं आदिवासी गई की गभित द्वारा आदिवासियों गुंजाइश कोई प्रायः नहीं रह जाती ओर सभ्य साँप उन्हें धोखा देकर, निर्लजतापूर्वक डस लेते हैं | आरण्य की- संस्कृति के उन्नायक इन अरण्यवासियों के बीच मूल रूप से मुझे यदि कोई पिछड़ापन दिखाई देता है, तो वह है उनका बौद्धिक पिछड़ापन |[3]

आर्थिक समस्या

जनजाति समाज की प्रमुख समस्या ऋणग्रस्तता है | ऋण की समस्या आज वतमान में भी बनी हुई है | इस प्रक्रिया को सरकार ने समाप्त करने के लिए कई कानून बनाएं हैं लेकिन इसकी उपेक्षा करके लोग आदिवासियों की जमीनों को हड़प रहे हैं | बघुआ मजदूरी इसका सबसे बड़ा कारण है| सरकारी संस्थाओं के द्वारा ऋण प्रक्रिया जटिल, अशिक्षा, गरीबी ओर बेरोजगारी है | योगेश अटल और यतीन्द्र सिह सिसोदिया जी ऋणग्रस्तता के बारे में लिखते हैं समस्याओं की ऋण - को सुलझाने तथा आपसी झगड़ों को निपटाने के लिए पहले आदिवासी अपनी पंचायतों का सहारा लेते थे | अब वे इन मामलों को सरकारी अदालतों में ले जाते हैं | रूपया ऐठने के लिए वकील उन्हें मुकदमेबाजी के लिए उकसाते हैं | इस प्रकार सरल, सामान्य और संतुलित आदिजातीय जीवन में द्वेष, वेमनस्य और विश्रृंखलता पैदा हो गई है । बीका वर्गीज .जी. कहना है को आदिवासियों वाले जीने जीवन मुक्त जहाँ - वंचित से अधिकारों और भूमि अपनी होना पड़ रहा है, वहीं अधिकतर दलित भूमिहीन हैं और यथा स्थिति से खीजे रहते हैं, जो उनके मान है हानिकारक लिए के कल्याण एवं सम्मान- | वे समानता और निष्पक्षता चाहते हैं और जाति का उत्पीड़न- हैं चाहते अंत| अतः विरोधाभास यह है कि जो लोग चाहते हैं कि उन्हें अकेला छोड़ दिया जाए, उन्हें अनेच्छिक घुसपैठ का सामना करना पड़ता है और जो उसमें शामिल होना चाहते हैं, उन्हें सामाजिक और आर्थिक बहिष्कार सहना पड़ता है |[4]

राजनीतिक समस्या

आदिवासियों की कुछ ऐसी मूलभूत समस्याएँ हैं, जो उनके विकास में बाधक है | परन्तु यह बिलकुल भी नहीं कहा जा सकता कि सभी समस्याएँ गेर आदिवासी समाज द्वारा दी गई हैं | कुछ समसस्याएँउन्होंने खुद भी पैदा की हैं | कुछ समस्याएँ ऐसी हैं जो विकास और परिवतन के बीच की प्रक्रिया में विभिन्नता के टकराव से उत्पन्न होती है | जब उसे

www.ignited.in

हम समझ नहीं पाते हैं तो वही न समझी बाद में विफलता का रूप धारण कर लेती है | ऐसी स्थिति में यह बेहद् जरूरी हो जाता है कि अलग-अलग समूहों में बंट आदिवासियों के बीच तालमेल बिठाकर एक जनसामान्य नागरिक के तौर पर बराबरी का दर्जा दिया जाए | उनका विकास किया जाए और उनकी पहचान को समाप्त होने से बचाया जाये |[5]

आदिवासी क्षेत्र में राजनीतिक गतिविधियों का मकड़जाल अब तेजी से फेलने लगा हे | वहाँ के ग्राम पंचायतों के चुनावी माहौल अधिक तीव्र और भयानक होते हैं | एक दूसरे के लोग खून के प्यासे तक हो जाते हैं | पहले ऐसा दृश्य देखने को नहीं मिलता था, लेकिन उनकी शर्तें कुछ कठिन अवश्य होती थीं | आदिवासी अपने सरदार को चुनने के लिए बाहुबली के मानकों को बाकायदा निर्वाह करते हैं | सभी प्रदेशों के राज्यपाल को इतना अधिकार मिला हुआ होता है कि वह जनजाति क्षेत्रों में विकास का एक खूबसूरत माहौल पैदा कर दे लेकिन राज्यपाल पांचवी अनुसूची के अधिकारों का प्रयोग ही नहीं करता है | अब तक हरेक जनजातीय राज्य में पंचायतों के आम कानून ही जनजाति क्षेत्रों पर लागू होते रहे हैं | जिससे हमेशा राजनीतिक समस्या बनी रहती है ।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्या

आदिवासी समाज में कई ऐसी कुप्रथाएँ हैं, जिनकी वजह से उन्हें समस्याओं का सामना करना पड़ता है | चाहे उनके वैवाहिक रीति-रिवाज हो या फिर अंत्येष्टि रीवाज | नागा जनजाति में विवाह की ऐसी ही एक प्रथा है | जनक अरविन्द लिखते हैं - नागा जाति में विवाह की रीतियाँ भी बड़ी आकर्षक होती है | विवाह के लिए केवल उसी लड़के को लड़की के योग्य समझा जाता है | जिसने कम से कम दो चार आदमियों का खून कर रखा हो | हमारी तरह इन लोगों में माँ बाप को विवाह के लिए वर खोजने की चिता नहीं करनी पड़ती | लड़का अथवा लड़की स्वयं ही एक दूसरे को पसन्द करके अपना जीवन साथी निश्चित कर लेते हैं |[6]

नस्लीय समस्या

हमारे देश में नस्लीय समस्या एक मुख्य समस्या है | आए दिन हमें नस्लीय भेद पर भाव-टीका- टिप्पणी सुनने को मिलती रहती हे | इस नस्लीय समस्या से सबसे ज्यादा अगर कोई प्रभावित हुआ है तो वह जनजातीय समुदाय है | आदिवासी समुदाय को लोग जंगली, जानवर आदि के नाम से पुकारते हैं | कभी हैं करते टिप्पणी हुए करते बात में आपस लोग तो कभी- तुम यार एकदम आदिवासी जंगली हो क्या इस तरह की प्रतिक्रिया सभ्य समाज को कतई शोभा नहीं देता है | आदिवासी समुदाय के लोग विद्यार्थी जीवन से लेकर अधिकारी पद् तक का सफ़र नस्लीय टिप्पणी के साथ तय करते हैं | देश ओर समाज दोनों के लिए यह विचारणीय प्रश्न है? अभी हाल ही में अंतरराष्ट्रीय तीरंदाज महिला आदिवासी झानू हांसदा नस्लीय भेदभाव की शिकार हुई | झानू हांसदा वर्जीनिया में (अमेरिका) तीन हुए करते प्रदर्शन शानदार में खेलकूद पुलिस विश्व संपन्न स्वर्ण पदक जीत करके भारत का नाम रोशन किया | वह विश्व तीरंदाजी, सैफ खेल, एशियाई तीरंदाजी आदि में कई पदक जीत चुकी हैं | वह अपने दर्दू को खुद मीडिया के सामने बयान करती हैं हूँ हुई बनी ही इंस्पेक्टर सब में से वर्षों सात पिछले -| मेरे बाद आने वालों को प्रमोशन दे दिया गया । मेंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मुझे लेकिन हैं जीते पदक कई (छोड़कर ओलंपिक) आदिवासी होने का दंश झेलना पड़ रहा है | मुझे आज तक प्रमोशन नहीं दिया गया |[7]

भाषायी समस्या

आज आदिवासी समाज की भाषा एवं लिपि को संजोने की जरूरत है | लिपियों के समाप्त होने एक समुदाय की पहचान ख़त्म हो जाती है | हो जनजाति की भाषा एवं लिपि सम्बंधी समस्या के सन्दर्भ में डॉ. आदित्य प्रसाद सिन्हा का मत है - हो भाषा और साहित्य के विकास की गति काफी मन्थर रही है | प्रकाशन के अभाव में अनेक लेखकों और कवियों की रचनाएँ प्रकाश में नहीं आ सकी हैं | हो रचनाओं की प्रस्तुति मुख्य रूप से हो भाषा में होती रही है | अतः उसके पाठक अधिकांश हो भाषा रहे ही भाषी-| आदिवासी की बोली तथा मौखिक भाषा- है प्राचीन अति| आम लोगों के लिए बोलना और पढ़ना बेहद् कठिन है | जिसके कारण कई ऐसी जनजातीय बोलियाँ आज विलुप्त होने की कगार पर हैं | अगर समय रहते इनका संरक्षण नहीं किया गया तो यह हमेशा के लिए समाप्त हो जाएँगी | आज जरूरत है कि आदिवासी बोली को भाषा- विश्वविद्यालय, विद्यालय के पाठ्यक्रमों में एक विषय के रूप में रखा जाए | तभी इसका संरक्षण संभव है | अब हो जनजाति भाषा को ही ले लीजिए इसका साहित्य लेखन प्रचुर मात्रा में हे परन्तु इसका विकास नहीं हो पा रहा है | इस परिप्रेक्ष्य में किसी भी भाषा और साहित्य का विकास उसके लेखकों के साथ संख्या की पाठकों और प्रकाशकों उसके साथ- [8] है करता निर्भर पर

आदिवासी शैक्षिक समस्याएँ

कुछ वर्षों पूंव आदिवासी समुदाय की बोलीभाषा-, गीत संगीत- थे ही मौखिक सब आदि| अब जाकर उसे लिपिबद्ध किया जा रहा है हलाँकि यह प्रयास 00 प्रतिशत में से 30 प्रतिशत ही

www.ignited.in

हो रहा है बाकी 70 प्रतिशत का कुछ पता नहीं है | आदिवासी समुदाय की भाषाअन्य बोली- समुदायों की अपेक्षा भिन्न हे | इस भिन्नता के कारण उनसे वार्तालाप करना कठिन है | वह इसलिए भी दुष्कर है, क्योंकि आधुनिक मानव के पास आदिवासी बोलियों का ज्ञान नहीं है | जब तक उनकी बोलियों का ज्ञान नहीं होगा तब तक आदिवासी समुदाय में शिक्षा का प्रचारप्रसार- उच्चतर स्तर पर नहीं हो पायेगा | व्याकरण, ध्वनि, भाषा आदि जैसी समस्याएँ इनके सामने मुँह खोले खड़ी हैं |[9] आदिवासी शैक्षणिक समस्या के संदर्भ में विश्व बरूवा का कहना है भाषा हिंदी - का व्याकरण एक समस्या है | भारतीय आरय भाषाएँ वैज्ञानिक तत्त्व पर आधारित है, लेकिन हिंदी व्याकरण की लिग विधि एक अवैज्ञानिक रीति है विशेषतः अहिदी भाषियों के लिए | इस रीति से जनजाति लोग बिल्कुल अपरिचित हैं | अतः यह भी एक समस्या है | जब लिंग ज्ञान दिया जाता है तो पढ़ना ही छोड़ देते हैं | इसके साथ पाठ्य पुस्तक की आलोचना करना उचित होगा । यों ही ये लोग आर्थिक दृष्टि से दुर्बल हैं और अर्थनीति का ज्ञान उनमें नहीं है | शिक्षा में जो खर्च होता है, वह दरअसल खर्च नहीं जमा है | यह बात वे नहीं जानते | उनकी धारणा है कि किताब खरीदकर पढ़ना बेकार है | किताब खरीदने में जो खर्च होगा उतने में दूसरा काम हो जाएगा |[10]

उपसंहार

आदिवासी समुदाय ओर चुनोतियाँ का अध्ययन करते समय पता चला कि अब तक जितने भी आन्दोलन आदिवासियों द्वारा किए गये, वह सब जल, जंगल और जमीन के लिए किये गए हैं और वही आन्दोलन समकालीन में आदिवासी विमश के पर्याय बने | जंगलों में सुकून से जीने वाले आदिवासी समाज को आखिर क्या जरूरत पड़ी थी? कि वह आधुनिक मानव के विरुद्ध हथियार उठाने पर मजबूर हो गया | यह बात कहीं न कहीं आदिवासी समाज की समस्याओं की तरफ संकेत करता है | सन 7]2 का मल पहाड़िया आन्दोलन, 1834-32 का कोल विद्रोह, 93 का मानगढ़ विद्रोह, 88 का तिलका माँझी विद्रोह, 1782 का तमाड़ विद्रोह, 89-20 का मुण्डा विद्रोह, 1820-2 का हो विद्रोह इत्यादि आदिवासी समाज के हक़ और हकूक की बात करते हैं | वेसे आदिवासी समाज की समस्याएँ भौगोलिक क्षेत्रों से अधिक जुडी हुई हैं | अगर सही मायने में देखा जाए तो समकालीन दौर में आदिवासी समुदाय की सामाजिक समस्याएँ, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक ओर नस्लीय समस्याओं के साथ ही भाषाई समस्या का भी प्रश्न उठ खड़ा हुआ है |

संदर्भग्रंथ सूची

1. चन्देश्वर यादव (संपा.) - आदिवासी समाज का वैचारिक मूल्यांकन, आगमन प्रकाशन, हापुड, संस्करण - 2014, पृष्ठ - 08
2. जगदम्बा मल्ल - स्वतंत्रता सेनानी रानी गाइदिन्ल्यू, हेरिटिज फाउंडेशन, गुवाहाटी, असम, संस्करण - 2014
3. सुनील गोयल, सुनीता गोयल - भारत में सामाजिक परिवर्तन, आर.बी.एस. पब्लिशर्स, जयपुर, 2003, पूछ-47
4. रमणिका गुप्ता (संपा.) - आदिवासी लोक भाग-, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण - 2012, पृष्ठ - 5
5. डॉ. जे.पी.सिह, समाज शास्त्र : अवधारणाएँ एवं सिद्धांत, [॥ लनिग प्रा.लि., दिल्ली, द्वितीय संस्करण- 2005, पृष्ठ-59
6. जे.पी.सिंह - समाजशास्त्र के मूल तत्व, //# लनिग प्रा.लि., दिल्ली, ठ्वितीय संस्करण- 2007, पृष्ठ-58
7. सुनील गोयल, सुनीता गोयल - भारत में सामाजिक परिवर्तन, आर.बी.एस.ए, पब्लिशर्स, जयपुर, 2003, पृषट-309
8. डॉ.जे.पी.सिह - आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन: 2वीं सदी में भारत, शत लनिंग प्रा.लि. द्वितीय संस्करण - 2016, पृष्ठ -25
9. अहमद, डॉ. एम. फ़िरोज़, वाहन्य, त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका, आदिवासी विशेषांक-2,अलीगढ़ , अक्टूबर 2013 ,पू.सं. 81
10. अहमद, डॉ . एम. फ़िरोज, वाहनय त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका,आदिवासी विशेषांक |, अलीगढ़, 2013, पृ. सं.100

Corresponding Author

Mukesh Rani*

Research Scholar, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

www.ignited.in